मारवाड़ का इतिहास

मारवाड़ रियासत राठौर वंश

⇒ प्राचीन नाम ⇒ मरुकान्तार

⇒ क्या नाम ⇒ जोधपुर + इसके आस-पास का क्षेत्र

⇒ इसके अन्तर्गत ⇒ जोधपुर + पाली

⇒ भाषा ⇒ मारवाड़ी भाषा

राठौर वंश

⇒ राठौड़ शब्द की उत्पत्ति हुई ⇒ राष्ट्रकूट शब्द से हुई
↳ कौन थे ⇒ दक्षिण का वंश था।

⇒ मान्यतानुसार ⇒ राठौर की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित अर्द्धचन्द से हुई थी।

⇒ मुहणोत नैनसी + कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार राठौर कन्नौज (U.P.) से आये थे।

⇒ कुलदेवी ⇒ नागणेची माता (मंदिर - जोधपुर)

⇒ राजधानी क्रमशः ⇒ खेड़ (पाली) → नाकोड़ा (बाड़मेर) → मण्डौर (जोधपुर) → जोधपुर

शासकों का क्रम

↓

संस्थापक - राव सीहा
↳ राजधानी ⇒ खेड़

↓

धूहड़ जी

↓

मल्लीनाथ → राजधानी → नाकोड़ा

↓

राव चूडा → राजधानी → मण्डोर

↓

राव रणमल

↓

राव जोधा
- → नगर बसाया ⇒ जोधपुर
- → राजधानी ⇒ जोधपुर

↓

राव सातलदेव

↓

राव गंगा

↓

राव मालदेव → उपनाम
- ⇒ हशमत वाला शासक
- ⇒ महान पुरुषार्थी शासक

↓

राव चन्द्रसेन → उपनाम
- ⇒ भूला बिसरा शासक
- ⇒ मारवाड़ का प्रताप
- ⇒ प्रताप का अग्रगामी

↓

मोटा राजा उदयसिंह → सर्वप्रथम मुगलो से संधि की

↓

सूरसिंह। शुजा → उपाधि → राजा

↓

गजसिंह → उपाधि → दलथम्भन

↓

जसवंतसिंह → उपाधि → महाराजा

अजीतसिंह → उपनाम → कान का कच्चा शासक

↓

अभयसिंह ⇒ अमृतादेवी विश्नोई घटना

↓

विजयसिंह
- → उपनाम ⇒ जहांगीर का नमूना
- → पासवान ⇒ गुलाबराय (मारवाड़ की नूरजहाँ

↓

मानसिंह
- → उपनाम ⇒ संन्यासी शासक
- → इसने सर्वप्रथम अंग्रेजों से संधि की

↓

स्वरूपसिंह ⇒ 1857 की क्रान्ति के समय था।

↓

जसवंतसिंह II

↓

सरदारसिंह ⇒ इसके काल में जोधपुर को पोलो का घर कहा

↓

उम्मेदसिंह

↓

हनुवन्तसिंह

राठौड वंश

- संस्थापक ⇒ **राव सीहा**
  - स्थापना समय ⇒ 1243
  - स्थापना स्थान ⇒ पाली + इसके आस-पास
  - राजधानी ⇒ खेड़ (पाली)
  - छतरी स्थित है ⇒ बीठू गाँव (पाली)

धूहड जी

- काम ⇒ कर्नाटक से नागणेची माता की मूर्ति लाया।
- मंदिर बनवाया ⇒ नगाड़ा गाँव (बालोतरा) में **नागणेची माता**
  - कहा गया ⇒ अष्टभुजी
  - कुलदेवी ⇒ राठौर वंश की कुलदेवी

मल्लीनाथ जी

- राजधानी ⇒ नाकोड़ा (बाड़मेर)
- गुरु ⇒ **उगमराज** ⇒ इनके कहने पर इन्होंने राजपाठ त्याग कर पहाड़ियों में तपस्या के लिए गये।
- इन्होंने अपना राज्य अपने भतीजे राव चून्डा को दे दिया।
- ऐसे राजा जो एक लोकदेवता के रूप में प्रसिद्ध हुए थे।
- उपनाम ⇒ चमत्कारिक पुरुष + भविष्यवक्ता देवता

<u>note</u> ⇒ मल्लीनाथ जी के नाम पर पर्वत का नाम मालाणी पर्वत पड़ा जो (बाड़मेर) में है।

राव चूडा

- समकालीन ⇒ मण्डौर शासक इंदा प्रतिहार था।
  - यह परेशान था ⇒ मुस्लिम लूट-पाट से
- चूडा ने इंदा प्रतिहार को मुस्लिम लूट-पाट से मुक्ति दिलवाई
  - पुत्री ↓ चांदकुंवर — शादी — चूडा
    - दहेज में मिला ⇒ मण्डौर
    - निर्माण ⇒ चांदबावडी (जोधपुर) | note ⇒ मुख्य चांदबावडी ⇒ आभानेरी (दौसा)
- राजधानी बनाई ⇒ मण्डौर
- 3 संतान
  - रणमल
  - कान्हा
  - हंसाबाई — शादी — राणा लाखा

  > बडे पुत्र रणमल के स्थान पर छोटे पुत्र कान्हा को राजा घोषित किया।

रणमल राठौर (1427-38)

- बहिन हंसाबाई की शादी राणा लाखा से हुई।
- पिता ⇒ राव चुण्डा से गुस्सा होकर चला गया - मेवाड राणा लाखा के पास
- युद्ध हुआ ⇒ 1427 में रणमल ने मेवाडी सेना से कान्हा को पराजित कर मारवाड पर अधिकार कर लिया।
- पुत्र ⇒ राव जोधा

→ इसकी हत्या की ⇒ कुम्भा के कहने पर दासी भारमली द्वारा जहर देकर

राव जोधा (1438-89)

→ पिता ⇒ रणमल की मृत्यु के कारण जोधा रियासत से भागकर शरण ली ⇒ काहुनी गाँव (बीकानेर)

→ संधि हुई ⇒ मध्यस्थता की हंसाबाई द्वारा ⇒ 1453 आवल - बावल की संधि

मध्य हुआ → राणा कुम्भा → पुत्र → रायमल ; राव जोधा → पुत्री → श्रृंगारदेवी

रायमल ← शादी → श्रृंगारदेवी

शर्त ⇒ मेवाड़ मारवाड़ की सीमा निर्धारित की।

→ समकालीन लोकदेवता

हड़बूजी
- ⇒ मंदिर ⇒ बेंगटी गाँव (फलौदी)
- ⇒ इन्होंने जोधा के राजा बनने की भविष्यवाणी की थी।

→ नगर बसाया ⇒ जोधपुर 1459 में

note उदयपुर बसाया = 1559 में उदयसिंह

→ राजधानी बनाया ⇒ जोधपुर

→ निर्माण किया ⇒ मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)
- ⇒ पहाड़ी ⇒ चिड़ियाटूक पहाड़ी पर
- ⇒ आकृति ⇒ मोर / मयूर के समान
- ⇒ उपनाम ⇒ मोरध्वजगढ़
  - ⇒ मयूरध्वजगढ़

→ निर्माण करवाया
- ⇒ नागणेची माता मंदिर ⇒ मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर में)
- ⇒ चामुण्डा माता ⇒ मेहरानगढ़ (जोधपुर में)

└→ इनका ५ वा पुत्र **राव बीका** ⇒ इसने 1488 में आखातीज को बीकानेर बसाया और बीकानेर में राठौर वंश की स्थापना कीजिए।

राव सातलदेव (1489-92)

- जोधपुर
  - ↓ पीपाड़ गाँव
  - ↓ गणगौर
  - ↓ 140 लड़किया गणगौर पूजा कर रही थी
- अजमेर
  - ↓ मल्लू खां
  - ↓ सेनापति — घुड़ले खां
  - ↓ पुत्री — गिदोली
- 1492 कोसाणा का युद्ध
  - सातलदेव └→ जीत
  - घुड़लेखां └→ हार
  - ⇒ घुड़ला त्यौहार ⇒ जोधपुर

NOTE ⇒ घुड़ले खा 140 लड़कियों को कैद कर लिया जिसके कारण कोसाणा युद्ध हुआ और घुड़ले खा मारा गया घुड़ले खा 140 कन्याओ को कैद कर लिया और घुड़ले खा मारा गया।

NOTE ⇒ घुड़ले खा की बेटी गिदोली उसका सिर ले जाती है। जिस कारण मारवाड़ में घुड़ला नृत्य किया जाता है।

राव गंगा

- निर्माण ⇒ गंगा बावड़ी ⇒ गंगश्याम मंदिर 〉 जोधपुर मे
- पुत्र ⇒ राव मालदेव

- समकालीन शासक ⇒ राव गंगा (1509-28) → 1527 खानवा का युद्ध
  - सांगा → हार
    - साथ दिया → राव मालदेव
      - → राव गंगा द्वारा भेजा गया था।
  - बाबर → जीत
- हत्या की ⇒ पुत्र मालदेव द्वारा इसको अफीम के नशे से छत से धक्का देकर मार दिया था।

राव मालदेव (1531-62)

- प्रारम्भ में नियुक्त किया ⇒ सोजत (पाली)
- उपनाम ⇒
  - मारवाड़/राठौड़ों का पितृहन्ता ⇒ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने
  - m महान पुरुषार्थी शासक ⇒ बदायूनू ने
  - m हशमत वाला शासक ⇒ फारसी इतिहासकारों ने कहा
- राज्याभिषेक
  - प्रथम करवाया ⇒ सोजत (पाली)
  - पुन राज्याभिषेक ⇒ जोधपुर
- शादी हुई / रानी ⇒ **उमादे**
  - यह आजीवन रूठकर रही जो शादी की पहली रात ही रूठकर ही चली गई थी।
  - आजीवन रूठकर रही थी ⇒ तारागढ़ दुर्ग (अजमेर)
  - m उपनाम ⇒ रूठी रानी
- दरबारी विद्वान ⇒ **ईश्वरचन्द्र** → पुस्तक लिखी ⇒ **हाला झाला री कुण्डलिया**
- समकालीन शासक
  - मेड़ता का शासक ⇒ वीरमदेव
  - बीकानेर का शासक ⇒ राव जैतसी ~~पुत्र~~ → कल्याणमल
  - दिल्ली का सुल्तान ⇒ शेरशाह सूरी ~~इसके बाद~~ → अकबर
- राव मालदेव ने 1538 में मेड़ता के **वीरमदेव** को पराजित किया था।
  - यह मदद के लिए भागकर गया दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी के पास
- युद्ध हुआ ⇒ **1541 - पाहेबा/साहेबा का युद्ध**
  - मालदेव → जीत
  - राव जैतसी → हार
    - लड़ते हुए मारा गया
    - पुत्र - कल्याणमल ने भागकर शेरशाह के पास शरण ली।

→ युद्ध हुआ ⇒ **5 जनवरी 1544 - गिरि सुमेल का युद्ध**

- **शेरशाह सूरी**
  - जीत
- **राव मालदेव**
  - हार
  - सेनापति → जैता, कूंपा > मारे गए।

note ⇒ इस युद्ध से पहले राव मालदेव युद्ध स्थल छोड़कर चला जाता है।

note ⇒ शेरशाह सूरी मुश्किल से युद्ध जीतने के बाद कहता है।
"मैं आज मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता"

⇒ **1562 ⇒ जैतारण का युद्ध** (पाली)

- **अकबर**
  - जीत
- **मालदेव**
  - हार
  - मारा गया

राव मालदेव

- पुत्र ⇒ उदयसिंह, राम > यह गुस्सा होकर अकबर के पास चले गये।
  - चन्द्रसेन ⇒ इसको राव मालदेव ने रानी स्वरूपदे के कहने पर शासक बनाया।

राव चन्द्रसेन

- **उपनाम**
  - मारवाड़ का प्रताप
  - भूला-बिसरा राजा
  - प्रताप का अग्रगामी
- पिता ⇒ राव मालदेव

- विरोधी भाई → उदयसिंह, राम > यह मदद के लिए गये - अकबर
- समकालीन बादशाह ⇒ अकबर (1556-1605)
- युद्ध हुआ ⇒ 1563 लोहावट का युद्ध
  - चन्द्रसेन → जीत
  - उदयसिंह → हार
- युद्ध हुआ ⇒ 1564 - मेहरानगढ़ का युद्ध
  - चन्द्रसेन → हार
  - राम → जीत
- अकबर ने आयोजन किया ⇒ नागौर दरबार - 1570
  - आयोजनकर्ता ⇒ अकबर
  - उद्देश्य ⇒ राज० के सभी शासक इसमें उपस्थित होकर अकबर की अधीनता स्वीकार की।
  - भाग लिया ⇒
    - जैसलमेर – हरराय भाटी
    - बीकानेर – कल्याणमल
    - आमेर – भारमल
    - जोधपुर – उदयसिंह

⇒ राव चन्द्रसेन दरबार में उपस्थित हुआ लेकिन बिना अधीनता स्वीकार किए लौट गया।

⇒ अकबर ने चन्द्रसेन को पकड़ने भेजा सेनापति ⇒ शाह हुसैन को

⇒ चन्द्रसेन ने क्रमशः शरण ली

⇒ सिवाणा में, (बालोतरा), भाद्राजूण पहाड़ी, (जालौर), सारण की पहाड़ी, (पाली)
सिचियाय गाँव (पाली)
→ यहां 1581 में मृत्यु हुई।

Note ⇒ अकबर ने (1581-83) तक दो वर्ष के लिए खालसा भूमि घोषित कर दिया।

मोटाराजा उदयसिंह (1583-95)

- → समकालीन बादशाह ⇒ अकबर
- → जोधपुर / मारवाड़ का पहला शासक जिसने मुगलों की अधिनता स्वीकार की
- → उपाधि ⇒ मोटाराजा — दी थी → अकबर ने
- → पुत्री ⇒ मानीबाई / जगतगुसाई — इसकी शादी → सलीम / जहांगीर
  - → यह मारवाड़ के किसी शासक ~~स्वयं~~ द्वारा मुगलों से बनाया गया सर्वप्रथम वैवाहिक संबंध था।
- → मुगलों के दरबार / महल सर्वप्रथम जाने वाला मारवाड़ का शासक था।

गजसिंह (1619-38)

- → समकालीन बादशाह ⇒
  - → जहांगीर (1605-28)
  - → शाहजहां (1628-58)
- → उपाधि ⇒ दलथम्बन — दी थी → जहांगीर
  - → अर्थ ⇒ समूह को रोकने वाला
- → 2 पुत्र
  - → अमरसिंह राठौर ⇒ नागौर शासक घोषित किया।
  - → जसवंतसिंह राठौर ⇒ जोधपुर शासक घोषित किया।
    - → इसको गजसिंह ने अनारा बेगम के कहने पर शासक बनाया था।
  - → अमरसिंह राठौर को कटार का धनी कहा गया।

जसवंतसिंह राठौड़ (1638-78)

- उपाधि ⇒ महाराजा —— शाहजहां ने दी थी।
- निर्माण करवाया ⇒ कागा उद्यान (जोधपुर) ⇒ महत्व ⇒ जोधपुर के सामन्तों की छतरियां स्थित है।
- रानी
  - जसवंत दे —— राईका बाग (जोधपुर)
  - नरूका
  - जादम

note ⇒ जोधपुर के राजाओं की छतरी ⇒ मण्डौर (जोधपुर)

- किताब लिखी ⇒ भाषा भूषण
- इसका दरबारी विद्वान ⇒ मुहणोत नैणसी —— किताब लिखी ——
  - नैणसी विख्यात
  - मारवाड़ परगना रि विगत
  - राज० अबुल फजल
- समकालीन बादशाह — शाहजहां (1628-58)
  - दारा
  - शुजा
  - मुराद
  - औरंगजेब
  - 1658 धरमत का युद्ध
    - औरंगजेब → जीत
    - दारा — साथ दिया — जसवंतसिंह
      - दारा → हार
  - 1659 - देवराइ / दौराई का युद्ध
    - दारा → हार
    - औरंगजेब → जीत
      - साथ दिया → औरंगजेब

- नया बादशाह बना ⇒ औरंगजेब (1658-1707)
  - इसने जसवंतसिंह को अफगानिस्तान अभियान पर भेजा था।
- मृत्यु ⇒ जमरूद (अफगानिस्तान) - 1678

- इसकी मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा ⇒ आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया / धर्मविरोधी मारा गया।

- रानी
  - ⇒ जसवंत दे → पुत्र हुआ → अजीतसिंह
  - ⇒ नरूकी
  - ⇒ जादम
    - → इन तीनों को औरंगजेब ने रूपसिंह की हवेली (दिल्ली) में कैद किया।
    - → औरंगजेब ने मारवाड़ को 1678 में खालसा भूमि घोषित किया।
    - → नरूकी + जादम ने हवेली से कूदकर आत्महत्या कर ली थी।
    - → दुर्गादास राठौर ने मुकुन्ददास खींची + महिला बाघेली के सहयोग से अजीतसिंह को रिहा करवाया।
    - ⇒ नकली अजीतसिंह छोड़ा इसका औरंगजेब ने नया नाम रखा ⇒ मौहम्मदरीज
    - → दुर्गादास + अजीतसिंह ने शरण ली ⇒ कालिंद्री गाँव (सिरोही) में जयदेव ब्राह्मण के लिए।

अजीतसिंह (1679–1724)

- → उपनाम ⇒ कान का कच्चा शासक
- → यह राजा बना ⇒ **1708 देबारी समझौते** के तहत
  - मेवाड़ → अमरसिंह II → पुत्री → चन्द्रकुंवरी
  - आमेर → सवाई जयसिंह
    - → शादी की → चन्द्रकुंवरी
    - → शादी की → सूरजकुंवरी
  - मारवाड़ → अजीतसिंह
    - → पुत्री → सूरजकुंवरी
    - → अ० पुत्री → इन्द्रकुंवरी → फर्रुखसियर
      - इन्द्रकुंवरी → यह राज. का अन्तिम मुगल राजपूत विवाह था।

→ विश्वासपात्र सेनापति ⇒ **दुर्गादास राठौर**

→ कौन था ⇒ कुनेरा (जोधपुर) जागीरदार था

→ इसे अजीतसिंह द्वारा गबन का आरोप लगाकर जोधपुर से निकाल दिया।

→ उपनाम ⇒ मारवाड़ का अणबिन्दिया मोती
⇒ राठौड़ों का यूलीसेज
⇒ राठौड़ों का उद्धारक

→ मृत्यु ⇒ 1718 में उज्जैन (M.P.) में क्षिप्रा नदी के किनारे यहां इसकी छतरी स्थित है।

→ 2 पुत्र → अभयसिंह
→ **बख्तसिंह** ⇒ इसने पिता अजीतसिंह की हत्या कर दी।
⇒ मारवाड़ / राठौड़ों का दूसरा पितृहन्ता

note ⇒ अजीतसिंह राज॰ का एकमात्र ऐसा राजा है। जिसकी चिंता में पशु पक्षियों ने आहुति दी थी।

अभयसिंह (1724–49)

→ दरबारी विद्वान
→ वीरभाण —पुस्तक लिखी→ राजरूपक ग्रंथ
→ करणीदान → सूरजप्रकाश ग्रंथ
→ जगजीवन भट्ट → अभयोदय ग्रंथ

→ घटना हुई ⇒ **खेजड़ली की घटना 1730** ⇒ यहाँ पेड़ों की रक्षार्थ अमृतादेवी के नेतृत्व में 363 लोगों ने अपनी जान दी थी।

→ note ⇒ विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला आयोजित किया जाता है। ⇒ खेजड़ली गाँव (जोधपुर)

→ note ⇒ राज॰ का कल्पवृक्ष मेला लगता है। ⇒ मांगलियावास (अजमेर)

↳ इसके काल में आयोजित हुआ ⇒ हुरड़ा सम्मेलन – 17 July 1734
↳ उद्देश्य ⇒ मराठों के विरुद्ध राजपूत शासकों को एकत्रित करना।

विजयसिंह (1752-93)

→ पासवान/प्रेमिका ⇒ गुलाबराय → उपनाम ⇒ मारवाड़ की नूरजहाँ

→ उपनाम दिया ⇒ जहांगीर का नमूना → कहा था → श्यामलदास ने अपनी पुस्तक वीर विनोद में कहा था

→ समकालीन शासक
⇒ जयपुर का प्रतापसिंह (1778-1803)
⇒ मराठा जयप्पा सिंधिया

→ 1787 तुंगा का युद्ध ⇒ विजयसिंह ने मराठा सरदार जयप्पा सिंधिया की हत्या कर दी।
- प्रतापसिंह विजयसिंह ↳ जीत
- मराठा ↳ हार

1790 – डंगा का युद्ध
- विजयसिंह ↳ हार
- मराठा डी बाईग ↳ जीत

⇒ विजयसिंह ने मराठों से समझौता किया
1791 सांभर की संधि
↳ विजयसिंह ने मराठों को 60 लाख रुपये व तारागढ़ दुर्ग (अजमेर) दिया।

मानसिंह राठौड़ (1803 - 1843)

→ गुरु ⇒ आयस देवनाथ ⇒ इसने मानसिंह राठौड़ के शासक बनने की भविष्यवाणी की थी।
↳ इनके लिए मानसिंह ने जोधपुर में मंदिर बनाया।
⇒ महामंदिर (जोधपुर) ⇒ नाथ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ थी।

→ उपनाम
⇒ संन्यासी शासक

→ दरबारी विद्वान ⇒ बांकीदास —पुस्तक लिखी→ बांकीदास री ख्यात
→ कुकवि बतीसी
→ मानजसो मण्डन
→ वीता गया कथन ⇒ आओ अंग्रेजो मुल्क रै ऊपर

→ मारवाड़ का पहला शासक जिसने अंग्रेजों (EIC) से 1818 में संधि की थी

→ निर्माण करवाया ⇒ मानप्रकाश पुस्तकालय (जोधपुर)

→ इसके काल में विवाद हुआ ⇒ कृष्णा कुमारी विवाद ⇒ अमीर खां पिण्डारी के कहने पर कृष्णा को जहर देकर मार दिया गया था।

युद्ध हुआ ↓

1807 गिंगोली का युद्ध
- जगतसिंह I → जीत
- मानसिंह → हार

तख्तसिंह राठौर (1843-73)

→ 1857 की क्रांति के समय मारवाड़ का शासक था।

→ इसने दान दिया ⇒ अंग्रेज अधिकारी - लार्ड मेयो द्वारा 1872 में निर्मित मेयो कालेज के लिए 1 लाख रुपये दान किए थे।

जसवंतसिंह II (1873-95)

→ निर्माण ⇒ जसवंतसागर बांध (जोधपुर) ⇒ यह जोधपुर का हरा भरा क्षेत्र था।
⇒ जुबली कोर्ट (जोधपुर) ⇒ महारानी के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर (ब्रिटिश की)

→ पासवान / प्रेमिका ⇒ नन्ही जान / नन्ही बाई
→ इसने जोधपुर में रसोईया गौड़ मिश्र से मिलकर सरस्वती जी को जहर दिलवा दिया था।

NOTE ⇒ स्वामी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु 1883 में अजमेर में हुई।

सरदारसिंह (1895-1911)

- पिता ⇒ जसवंतसिंह II की याद में बनाया ⇒ जसवंतथड़ा महल (जोधपुर)
  - → राज० का ताजमहल
- यह शौकिन था ⇒ पोलो का खेल का
- इसके काल में जोधपुर को पोलो का घर कहते हैं।

उम्मेदसिंह

- निर्माण करवाया ⇒ उम्मेदभवन / छीतर पैलेस
  - → पहला रियासती महल कहते हैं।

हनुवन्तसिंह

- यह मारवाड़ के राठौड़ों का अन्तिम शासक था
- एकीकरण के दौरान पाकिस्तान में मिलना चाहता था।
  असफल हुआ।